No. of Printed Pages : 4

MBG–002

M. A. (BHAGWADGITA STUDIES)

Term-End Examination

June, 2026

MBG-002 : DHARMA, KARMA AND YAJNA

Time : 3 Hours *Maximum Marks : 100*

***Note** : (i) This question paper is in two Sections. Both Sections are compulsory.*

(ii) Attempt questions from both Sections as per instructions given.

Section—A

***Note** : Answer any **four** of the following questions.* *4×15=60*

1. Describe desire and sense of being a doer.
2. Describe the nature of Divine Birth and Action.
3. 'Action is a natural state of being.' Explain.

4. Describe in brief the relation between Equanimity and Knowledge.
5. Write about the steps of the Gītā.
6. Describe Karmayoga.
7. Write about the Divine nature of Knowledge.

Section—B

***Note** : Answer any **four** of the following questions.* *4×10=40*

1. Describe in brief the straightforward path of 'Karma'.
2. Write a note on 'Jñānī' and 'Ajñānī'.
3. Describe the concepts of Karma and Akarma.
4. Write about Social Harmony in accordance with the Gītā.
5. Describe the formulae of Self-Dependence on the basis of the Gītā.
6. Write a note on 'Jijñāsā (Curiosity) and Samarpana (Surrender).
7. Explain the following :

   परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।

   धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

MBG–002

एम. ए. (भगवद्गीता अध्ययन)

(एम. ए. बी. जी. एस.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

एम.बी.जी.-002 : धर्म, कर्म एवं यज्ञ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में है। दोनों खण्ड अनिवार्य हैं।*

(ii) दानों खण्डों में दिए गए निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—क

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

$4 \times 15 = 60$

1. इच्छा और कर्ताभाव का वर्णन कीजिए।
2. दिव्य जन्म और कर्म के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
3. कर्म की स्वाभाविक स्थिति का विवेचन कीजिए।
4. समता और ज्ञान के सम्बन्ध का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

5. गीता के सोपानों का निरूपण कीजिए।

6. कर्मयोग का वर्णन कीजिए।

7. ज्ञान की दिव्यता का निरूपण कीजिए।

खण्ड—ख

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

$4 \times 10 = 40$

1. कर्म के सरल मार्ग का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

2. ज्ञानी और अज्ञानी पर टिप्पणी लिखिए।

3. कर्म और अकर्म का वर्णन कीजिए।

4. गीता के अनुसार सामाजिक समरसता का उल्लेख कीजिए।

5. गीता के आधार पर आत्मनिर्भरता के सूत्रों का वर्णन कीजिए।

6. जिज्ञासा और समर्पण पर टिप्पणी लिखिए :

7. व्याख्या कीजिए :

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

× × × × ×